ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-7* October-2021
Anthology : The Research

डॉ. रघुवंश की आलोचना दृष्टि
Criticism of Dr. Raghuvansh

Paper Submission: 11/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10//2021

आभा सक्सेना
सह प्राध्यापक,
हिंदी विभाग
भगतसिंह शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जावरा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

नई आलोचना पर गंभीरता से विचार करने वाले आलोचकों में डॉ. रघुवंश का चिंतन महत्वपूर्ण है। एक आलोचक के रूप में उनके आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह 'साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सम सामयिकता और आधुनिक हिन्दी कविता तथा आधुनिकता और सर्जनशीलता के माध्यम से इन्होंने नई आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। साहित्य के मूल्यों की स्थापना के बिना आलोचना के मानदण्ड निार्धारित नहीं किए जा सकते इसलिए डॉ. रघुवंश सर्वप्रथम साहित्य के स्थाई मूल्यों के निर्धारण की बात करते हैं। साहित्य अभिव्यक्ति के रूप में ही मानवीय सहानुभूति के व्यापक और सहज तत्व को स्वीकृति प्रदान करता है। एक व्यक्ति की अनुभूति सामान्य भावभूमि होने पर ही दूसरे की अनुभूति का विषय बनती है इसीलिए साहित्य हर युग के लिए अर्थवान माना जाता है।

डॉ. रघुवंश ने भारतीय काव्यशास्त्र के रस सिद्धांत को महत्वपूर्ण माना। नई कविता की समसामयिक भावभूमि को उन्होंने अनेक कविताओं के उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया है। अनुभूति की बदलती हुई दिशाओं को व्यक्त करने के लिए वे नए शब्द विधान और नए शिल्प की आवश्यकता महसूस करते है। डॉ. रघुवंश ने अपने आलोचना कर्म के माध्यम से समसामयिक साहित्यकारों को प्रेरणा प्रदान करते हुए साहित्य की नई दिशा का अन्वेषण किया है।

The thinking of Dr. Raghuvansh is important among the critics who seriously consider the new criticism. As a critic, his collection of critical essays 'New Perspective of Literature holds an important place. Through contemporary and modern Hindi poetry and modernity and creativity, he has shed ample light on the theoretical side of the new criticism. Without establishing the values of literature, the criteria of criticism cannot be determined, so Dr. Raghuvansh first talks about determining the permanent values of literature. Literature accepts the broad and innate element of human sympathy in the form of expression itself. The feeling of one person becomes the subject of the feeling of another only when it is a common ground, that is why literature is considered meaningful for every era.

मुख्यशब्दः आलोचना, आधुनिकिता, समसमायाकिता, सर्जनशीलता, साहित्य साहित्यकार, मानदण्ड अभिव्यक्ति।

Keywords:Criticism, Modernity, Contemporary, Creativity, Literary Literature, Norm Expression.

प्रस्तावना

हिंदी आलोचना को गति प्रदान करने वाले को आलोचको में डॉ. रघुवंश प्रमुख स्थान रखते है आलोचना के सैधांतिक चिंतन को दिशा प्रदान की डॉ. रघुवंश के अनुसार- " इस प्रकार रूढ़िगत धर्म रूढ़िगत भौतिकवाद तथा रूढ़िगत समाजवाद तीनों ही आज मानवीय जीवन की समस्याओं को सुलझाने मैं असमर्थ हैं , परिणाम स्वरूप साहित्य के समीक्षात्मक मूल्यों के विश्य में आज अनिश्चय की स्थिति है।"[1]

सामान्यतः यह माना जाता है कि युग के परिवर्तन के साथ जीवन के मूल्य और साहित्यालोचन के मानदण्ड बदलते हैं पर वे मानते हैं कि इसमें आंशिक सत्य ही है क्योंकि कुछ शाश्वत मानव मूल्य भी है जो देशकाल की बदलती हुई परिस्थितियों में समान रूप से अन्तर्निहित हैं। हर काल का साहित्य जीवन को विशेष समग्रता में ही ग्रहण करता है इसलिए उसकी देशकाल से निरपेक्ष स्थिति हो जाती है। साहित्य जीवन के संतुलन का जो आधार ग्रहण करता है वह प्रत्येक युग के मानव में लगभग एक समान ही होता है संतुलन की यही संपूर्णता सौंदर्य बोध भी कहलाती है। यह नवीन सौंदर्य बोध समीक्षा का स्थायी मानदण्ड बन सकता है क्योंकि इसी में प्रयोजन या प्रेष्णयीता का सूक्ष्म समन्वय गति प्राप्त करेगा। साहित्यिक सौंदर्य बोध के अंतर्गत वे अनुभूति की निर्भरता , अभिव्यक्ति की निर्वेयक्तिकता प्रभाव की अलौकिकता आदि को स्वीकार करते है।

रघुवंश मानते हैं कि कुछ व्यक्ति अपने कार्यो से अथवा विचारों से अधिक से अधिक लोगों को प्रभावित करते हैं वे सामान्य वर्ग के प्रति अपने दायित्व का अनुभव करने लगते हैं। उनका मत

है कि " समाज ऐसा ढाँचा है जिसमें असमान व्यक्ति अपने हितों (स्वार्थो) के लिए एक दूसरे के साथ संगठित हुए हैं और इसमें जो जितनी शक्ति , प्रभाव, प्रतिभा को प्राप्त कर सकेगा वह अपने आप उस सीमा तक सामाजिक जीवन को शासित मर्यादित तथा नियंत्रित करेगा।" [2] वे यह भी स्वीकार करते हैं कि साहित्यकार अपनी रचनात्मक प्रक्रिया में पक्षपातों से सहज ही अलग रह सकता है क्योंकि वह समस्त जीवन अथवा मानवता के प्रति आस्थावान है। साहित्यकार सामाजिक जीवन की गति को ग्रहण करता है इसी कारण वह मानव के दायित्व को भी महत्वपूर्ण मानता है क्योंकि साहित्य मनुष्य के सांस्कृतिक मूल्यों की उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जाता है अतःसाहित्यकार तभी ईमानदार रह सकता है जब स्वविवेक से अपने दायित्व को परखने का कार्य करे। इससे साहित्यिक दायित्व उसकी सर्जनात्मक प्रक्रिया का हिस्सा बन जायेगा। वे वाल्मीकि , कालिदास, होमर शेक्सपियर , तुलसी, सूर आदि कवियों का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि इन्होंने अपने सीमित संस्कारों ईर्ष्या, द्वेष आदि से ऊपर उठकर अपने युग की उपलब्धियों के अनुरूप मानव हृदय को चित्रित किया है इसलिए उनका साहित्य हमें आकर्षित करता है। वे यह भी मानते है कि जो साहित्य समय की कसौटी पर खरा उतरा है वह निश्चय ही लेखक की आत्मोपलब्धि का साहित्य है। साहित्य सदैव संस्कृति के विकास में सहायक होता है। इसलिए वे कहते हैं कि " साहित्य ने निरंतर मानव संस्कृति को वहन किया है, युग विशेष की उपलब्धियों को आगत युगों के लिए सुरक्षित रखा है और यह स्वातंत्र्य का प्रतिमान साहित्य की रचनात्मक प्रक्रिया की आंतरिक प्रकृति से उद्भूत है।'[3]

वे मानते हैं कि साहित्यकार का व्यक्तित्व सामान्य होकर भी सृजनशीलता के कारण विशिष्ट है अतः उसके स्वातंत्र्य की आकांक्षा उसके दायित्व की बहुत बड़ी स्वीकृति है। स्वतंत्रता उसके लिए महान दायित्व है क्योंकि उसका दायित्व किसी वर्ग जाति अथवा राष्ट्र आदि स्थिर रूपों के प्रति न होकर सम्पूर्ण मानवता के प्रति है जिसका निर्णय स्वतंत्र व्यक्तित्व ही कर सकता है।

साहित्य अभिव्यक्ति के रूप में ही मानवीय सहानुभूति के व्यापक और सहज तत्व को स्वीकृति प्रदान करता है। एक व्यक्ति की अनुभूति सामान्य भावभूमि होने पर ही दूसरे की अनुभूति का विषय बनती है इसलिए साहित्य हर युग के लिए अर्थवान माना जाता है वे लोकप्रियता , नैतिकता तथा मर्यादा और जन कल्याण आदि मानदण्डों पर विचार करते हैं। उनका विचार है कि साहित्य और समाज के सम्बन्ध पर अनेक पूर्ववर्ती साहित्य शास्त्रियों ने विचार किया परंतु साहित्य की समाजवादी व्याख्या का एक आधार प्रगतिशील विचारधारा ने प्रस्तुत किया है। साहित्यालोचन के क्षेत्र में उसका महत्वपूर्ण योग है। वे यह भी मानते हैं कि साहित्य का कोई भी जनवादी सिद्धांत पर्याप्त नहीं हो सकता है यदि वह वर्तमान या अतीत के महान साहित्य की श्रेष्ठता को उदघटित न कर सके। वे यह भी स्पष्ट कहते हैं कि प्रेमचंद के गोदान की श्रेष्ठता और महानता इसी सत्य में निहित है कि वे इसमें सम्पूर्ण मानव इकाई को अपने हृदय की सच्ची और गहरी अनुभूति दे सके हैं। कौन ऐसा वर्ग है कौन ऐसा पात्र है जो उनकी सहानुभूति से पूर्णतः अभिभूत नहीं है। यह बात तो गौण है कि वे अपने युग के वर्ग संघर्ष को प्रतिबिम्बित कर सके और इस बात का कोई महत्व नहीं कि उनका श्रमिक वर्ग थका हारा है।[4]

अर्थात डॉ. रघुवंश मानते हैं कि जनवादी साहित्य की दृष्टि में सम्पूर्ण सामाजिक जीवन मानवता की वर्गहीन कल्पना को लेकर ही उपस्थित होता है इसके विस्तार में विविध संघर्ष आत्मर्निहित हैं।

साहित्य में प्रयोगवाद के संबंध में उनका मत है कि प्रयोग तो युगों से होते आये हैं चाहे वे व्यक्तिगत स्तर पर हो अथवा सामूहिक। डॉ. रघुवंश मानते हैं कि कभी-कभी युग संघर्ष नई चेतना को जन्म देते हैं और उसका साहित्य पिछले युग की समस्त परम्पराओं को तोड़कर नवीन स्थापनाएँ करता है। नई वास्तविक भूमि को पहचानने का प्रयास ही प्रयोगशील काव्य की सामान्य विषेशता मानी जा सकती है वे यह भी मानते हैं कि आधुनिक कवि स्वयं को विरोधी संघर्षो की परिस्थिति में महसूस करता है और अपना मार्ग निश्चित नहीं कर पा रहा है। मार्ग खोजने के महत्वपूर्ण संघर्ष को वे आज के कवि का मुख्य संघर्ष मानते हैं। उन्हें नये कवियों पर पूर्ण विश्वास है वे आशा करते हैं कि ये निश्चय ही उपयुक्त मार्ग खोज निकालेंगे। डॉ. रघुवंश ने भारतीय काव्यशास्त्र के रस सिद्धांत को महत्वपूर्ण माना। उनका मत था कि काव्य में यदि हम मानव जीवन को महत्व देंगे तो हमको काव्य में रस सिद्धांत की स्वीकृति माननी होगी पर हम तो काव्य के अन्य रूपों की उपेक्षा या उनको अस्वीकार नहीं कर सकते। आधुनिक मनोविज्ञान भावनात्मक प्रक्रिया में इच्छा शक्ति की प्रेरणा को महत्वपूर्ण स्थान देता है रस की व्याख्या के अंतर्गत आचार्यो ने इसका भी विश्लेषण किया है वे मानते हैं कि भट्ट लोल्लट के सिद्धांत में सत्य का अंश है परंतु उसमें स्पष्टता और व्यापकता का अभाव है शंकुक की व्याख्या मनोवैज्ञानिक है। भट्टनायक की शक्तियों की कल्पना में रस निष्पत्ति के लिए मनोवैज्ञानिक आधार को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है आचार्य अभिनव गुप्त तक पहुँचते पहुँचते रस सिद्धांतपूर्ण मनोवैज्ञानिक आधार प्राप्त कर चुका था। उन्होंने आस्वाद को रस निष्पत्ति में

स्वीकार करके काव्य सौंदर्य के उद्बबो में इच्छा शक्ति का होना स्वीकार किया है तथा संकल्प विकल्प से रहित मानकर काव्य द्वारा व्यंजित भावनात्मक स्थिति को कल्पनात्मक सौंदर्य से संबंधित किया है।स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए इसी नवीनता की ओर संकेत करते हुए डॉ. रघुवंश कहते है-'' साहित्य की वास्तविक काव्यधारा नये हाथों में जा चुकी है ये हाथ कितने ही कच्चे और नौसिखिए क्यों न हों पर आधुनिक युग की सारी सम्भावनाएँ इन्हीं पर केंद्रित हैं, नये आने वाले युग के मूल्यों की उपलब्धि का सारा दायित्व इन्हीं के कंधों पर है।''[5]

वे मानते हैं कि साहित्य का अधिकांश समय के प्रवाह में बह जाता है तथा वही अंश शेष रहता है जो युग की कसौटी पर श्रेष्ठ सिद्ध हो। इस स्थिति में आलोचक का दायित्व है कि वह साहित्य के सैलाब में से उचित एवं मूल्यवान तथ्यों को ग्रहण कर सके। इससे स्पष्ट है कि आधुनिक यथार्थ की इस दृष्टि ने आलोचना को भी प्रभावित किया है ऐसी स्थिति में प्रचलित पूर्वा ग्रहों के बीच समीक्षा का दायित्व और भी चुनौतीपूर्ण हैं। शैली शिल्प अभिव्यक्ति और प्रेषणीयता को आधार बनाकर आलोचकों ने नवीन काव्य के भावबोध को उद्घघटित करने का जो प्रयास किया है वह बहुत महत्वपूर्ण है।

डॉ. रघुवंश ने आधुनिकता के महत्व को आलोचना में स्वीकार किया है वे आधुनिकता को मूल्य दृष्टि या मूल्योंपलब्धि के रूप में स्वीकार नहीं करते और न ही उसे सामाजिक परिवेश के रूप में देखते हैं। वे आधुनिकता को मूल्य निरपेक्ष प्रक्रिया मानते हैं इस अर्थ में उसे मूल्यों का स्रोत भी कहा जायेगा तथा वह यथार्थ बोध का नया अनुभव-संदर्भ भी प्रस्तुत करती है।

आधुनिक युग के पूर्वार्द्ध के साहित्य को वे इसलिए महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि इससे आगे के साहित्य की भूमिका निर्धारित होती है। छायावाद के लिए आधुनिक युग के पूर्वार्द्ध में विस्तृत भूमिका तैयार हो चुकी थी। वे मानते हैं कि छायावाद में स्वातंत्र्य की चेतना व्यक्ति केंद्रित होने के कारण यह काव्य आत्मगत, कल्पनापरक, आदर्शवादी तथा अभिव्यंजनात्मक हो जाता है। इसी के फल स्वरूप काव्य में नवीन मोड़ आना स्वाभाविक था।

नई कविता की समसामयिक भावभूमि को उन्होंने अनेक कविताओं के उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है। युग जीवन के यथार्थ बोध और संशय की अनुभूति 'इंद्रधनु रौंदे हुए तथा योगफल' में मिलती है। अहं की उपलब्धि 'नरेश मेहता' के 'बन पाखी सुनो' में मिलती है।वे मानते हैं कि हैं कि आज का कवि परम्परा की झूठी पड़ गयी मर्यादाओं से सतर्क करते हुए 'महाप्रलय के बाद नये उगे शिखरों को चुनौती देकर अडिगखड़े रहने को कहता है।

डॉ. रघुवंश ने स्पष्ट किया कि नये युग के संदर्भ में भाव-बोध की नयी स्थितियों में भाषा और शैली का परम्परा से प्राप्त प्रयोग असमर्थ सिद्ध होगा। अनुभूति की बदलती हुई दिशाओं को व्यक्त करने के लिए नये शब्द विधान और नये शिल्प की आवश्यकता है।भवानी प्रसाद मिश्र की 'शब्दों के महल' 'धर्मवीर भारती की 'कवि और अनजान पगध्वनियाँ ' सर्वेश्वर की 'सौंदर्य बोध' को वे इसी तरह की रचनाएँ मानते है। 'दुष्यंत कुमार' की 'शब्दों की पुकार' 'जगदीश गुप्त की 'ज्योत कण' इस नई अनुभूति को नया अर्थ प्रदान करते हैं।

'नकेन के प्रपद्य' की रचनाओं को डॉ. रघुवंश वर्तमान समय की प्रयोगशील तथा नयी कविता से भिन्न नहीं मानते। नलिन की कविता 'गीतिदर्शन' में काव्य प्रक्रिया का स्वरूप है। डॉ. रघुवंश मानते हैं कि वैयक्तिक अनुभूति के कारण इन कविताओं में स्थितियों तथा उनके साथ शब्दों की संगतियाँ नयी है। 'नलिन' की ' बसंतगीत' और 'प्रत्यूष ' केसरी की 'वर्ष हारा' और 'प्रपद्य प्रारूप' तथा नरेश की 'मान' और 'शाम' नामक कविताओं में इसी प्रकार की नवीन संगतियों के आधार पर वस्तुस्थितियों का अंकन है।

डॉ. रघुवंश मानते है कि 'तीसरा सप्तक' की भूमिका नई कविता को समझने में अधिक सहायक होती यदि इसमें आधुनिकता की अधिक व्याख्या होती। इस संकलन की योजना में वे कवियों के वक्तव्य को महत्वपूर्ण मानते हैं। 'मदन वात्स्यायन' और 'विजय देवनारायण साही' का शील निरूपण उनकी कविता को समझने में कुछ हद तक ही सहायक है।

डॉ. रघुवंश मानते हैं कि 'सर्वेश्वर ' का काव्य व्यक्तित्व नये साहित्य के तत्वों को समझने में पूर्णतः समर्थ है। वे मानते हैं ''समसामयिकता का दायित्व तथा लोकसम्प्रति का भाव सर्वेश्वर की कविता में जिस आधुनिक संवेदन के स्तर पर व्यक्त हुआ है, वैसा आज के किसी कवि में नहीं मिलता। और इन दोनों प्रधान तत्वों के अनुरूप सर्वेश्वर की भाषा और शैली भी है।इस क्षेत्र में वस्तु और शिल्प का इतना पूर्ण सामंजस्य कवि की प्रधान उपलब्धि है।

शमशेर की काव्यगत धारणा को डॉ. रघुवंश उनकी दो कविताओं 'राग' और 'बात बोलेगी' से स्पष्ट करते हैं इनमें कवि अपनी काव्याभिव्यक्ति सम्बन्धी भावना को प्रभावात्मक बिम्बों में व्यंजित करने का प्रयत्न करता है। शमशेर आन्तरिक अनुभव की सहज अभिव्यक्ति को काव्य मानते हैं।

डॉ. रघुवंश मानते हैं कि 'विपिन' आधुनिक कवि और वैज्ञानिक हैं। उनकी दृष्टि साहित्य की अपेक्षा विज्ञान से अधिक विकसित हुई है। इसके परिणाम स्वरूप वे असंतृप्ति के कारण परम्परा से विद्रोह कर नये मार्ग के अन्वेषक बने हैं।

'अमृतलाल नागर' के उपन्यास 'बूँद और समुद्र' को डॉ. रघुवंश क्लासिकी परम्परा का उपन्यास मानते हैं क्लासिक और यथार्थ को जोड़ने के प्रयास में वे 'बूँद और समुद्र ' को नकारात्मक प्रभाव डालने वाला मानते हैं।

'श्रीधर पाठक को' डॉ. रघुवंश रचना गत वैशिश्ट्य के कारण महत्वपूर्ण मानते हैं। वे उनके ऐतिहासिक महत्व को स्वीकार करते हैं। उन्होंने द्विवेदी-युग की कविता को इतिवृत्तात्मक और राष्ट्रीय आदर्शों को अभिव्यक्त करने वाली स्वीकार किया है।

डॉ. रघुवंश 'धर्मवीर भारती ' के 'अंधा युग' और 'कनुप्रिया' को आधुनिक परिवेश में संवेदन के स्तर पर महत्वपूर्ण मानते हैं।

डॉ. रघुवंश मानते हैं कि जायसी का काव्य संस्कृति विशेष की मूल्य प्रक्रिया का रचना विधान है। जायसी ने अपने कथा-काव्य में युग जीवन के विविध पक्षों को , मूल्य के विभिन्न रूप स्तरों को तथा इतिहास और पुराण के तत्वों को संजोया है प्रत्येक स्थान पर उनकी संवेदना मार्मिक अभिव्यक्ति ग्रहण करती है।

डॉ. रघुवंश ने कबीर काव्य का मूल्यांकन एक विशेष दृष्टि से प्रस्तुत किया है। वे मानते हैं कि कबीर के व्यक्तित्व को व्यापक संदर्भ में तथा रचनात्मक स्तर पर समझने के लिए भक्ति आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में उसे ग्रहण करना होगा।

अध्ययन का उद्देश्य

नई आलोचना के विवेचन में डॉ. रघुवंश के आलोचनागत वैशिष्ट्य का मूल्यांकन करना इस शोध पत्र का उद्देश्य है। नई आलोचना को समृद्ध बनाने में जिन आलोचकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही उनमें डॉ. रघुवंश अग्रगण्य रहे। प्रस्तुत शोध पत्र में डॉ. रघुवंश की आलोचना के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट किया गया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः नई आलोचना को गति प्रदान करने वाले आलोचकों में डॉ. रघुवंश का स्थान महत्वपूर्ण है। एक आलोचक के रूप में अपने निबंधों के माध्यम से उन्होंने नई आलोचना के सैद्धांतिक पक्ष पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। वे मानते हैं कि साहित्य के मूल्यों की स्थापना के बिना आलोचना के मानदण्ड निर्धारित नहीं किए जा सकते इसलिए वे सर्वप्रथम साहित्य के स्थाई मूल्यों के निर्धारण की बात करते हैं।

डॉ. रघुवंश की आलोचना का व्यावहारिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने आधुनिक युग के पूर्वार्द्ध को इसलिए महत्वपूर्ण माना क्योंकि इससे आगे के साहित्य की भूमिका निर्धारित होती है।

स्पष्ट है कि डॉ. रघुवंश ने नई आलोचना को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की 'साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य' के माध्यम से उन्होंने परिवर्तित होते हुए साहित्य के मूल्यों पर दृष्टि पात किया। नई आलोचना के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष को गति प्रदान करने में इनका योग सराहनीय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य* - *पृ.स.-14*
2. *साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य* - *पृ.स.-27*
3. *साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य* - *पृ.स.-39*
4. *सम सामयिकता और आधुनिक हिन्दी कविता* - *पृ.स.-53*
5. *साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य* - *पृ.स.-64*
6. *आधुनिकता और सर्जनशीलता* - *पृ.स.-110*
7. *कबीर एक नई दृष्टि* - *पृ.स.-110*
8. *जायसी एक नई दृष्टि* - *पृ.स.-110*